विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव

अभिषेक श्रीवास्तव*
आर. एन. लाल श्रीवास्तव**

यह शोध पत्र एक सर्वेक्षण शोध पर आधारित है। इस शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के क्रमशः10–10 हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों के कक्षा11 में अध्ययनरत कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिसमें 400 छात्र एवं 400 छात्राएँ थीं। शोध का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं पर शैक्षिक चिंता के प्रभाव एवं शैक्षिक चिंता का लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव ज्ञात करना था। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण, शहरी, ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर इसका सार्थक प्रभाव पड़ता है। हिंदी माध्यम एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रत्येक बच्चा अपनी अभिरुचि, अभिवृत्ति, क्षमता, व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक रूप से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है, ठीक उसी प्रकार विद्यालयी वातावरण भी अपने क्रियाकलापों, अनुशासन, पठन-पाठन, भौतिक संसाधनों आदि में परस्पर एक-दूसरे से भिन्नता रखता है। विद्यालय का यह वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता, उपलब्धि, अभिप्रेरणा आदि को प्रभावित करता है, जिसका सीधा संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से होता है। क्योंकि जहाँ प्रशिक्षित, क्रियाशील एवं प्रेरणादायक शिक्षक होंगे एवं विद्यालय भी समस्त भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण होगा, वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता सामान्यतया कम होगी। विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित होते रहेंगे। यह सत्य है कि अच्छे विद्यालयी वातावरण में ही बालकों का उचित दिशा में विकास किया जा सकता है। यदि विद्यालय का वातावरण उत्तम होगा तो विद्यार्थियों को शैक्षिक कार्य के लिए उचित अभिप्रेरणा प्रदान करेगा तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सुनिश्चित करेगा। एक उत्तम विद्यालय उसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को

**प्राध्यापक* (एम. एड.), अवधूत भगवान राम पी. जी. कॉलेज, अनपरा, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश–231225
***एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, बी. एड. विभाग, सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चंदौली, उत्तर प्रदेश–232104

एक ऐसा विशिष्ट वातावरण प्रदान करता है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है, शिक्षा आयोग (1964–66) ने अपने प्राक्कथन में लिखा है— "भारत के भाग्य का निर्माण उसके कक्षा-कक्ष में हो रहा है।"

हम कह सकते हैं कि राष्ट्र के निर्माण में विद्यालयों का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नागरिकों का निर्माण इन्हीं विद्यालयों में होता है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण नागरिकों की पौध तैयार की जाती है। किसी विद्यालय की गुणवत्ता वहाँ के शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास पर पड़ता है, जिसका पोषण निश्चित रूप से विद्यालयों में ही हो सकता है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक शैक्षिक चिंता है, जो विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित रूप से प्रभावित करता है। शैक्षिक चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि एवं शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव डालती है। इस कारण इसकी भूमिका विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शैक्षिक चिंता के प्रतिक्रिया के स्वरूप विद्यार्थियों में उद्दंडता, अत्यधिक क्रोधित व्यवहार, दिवास्वप्न, मनो-शारीरिक थकावट, असामान्य व्यवहार आदि व्यवहार परिलक्षित होते हैं।

विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता का मुख्य कारण परिवार एवं शिक्षकों की बालक से उच्च आकांक्षाएँ रखना भी होता है। जब विद्यार्थी से उच्च स्तर की शैक्षणिक उपलब्धि या अन्य क्षेत्रों में सफलता की उम्मीद रखी जाती है और यदि विद्यार्थी उनके अनुरूप उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता तो वह चिंता से ग्रस्त हो जाता है। इस स्थिति में यदि शिक्षक एवं अभिभावक ऐसे विद्यार्थी के साथ कठोरता का व्यवहार करते हैं तो कभी-कभी वस्तु-स्थिति और अधिक बिगड़ने की संभावना रहती है, जो विद्यार्थी को असफलता की ओर ले जाती है एवं अनावश्यक मानसिक दबाव से विद्यार्थी का विद्यालय के वातावरण से समायोजन बिगड़ने की संभावना भी बनी रहती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी विद्यालय में अनुपस्थित रहने लगता है, गृह कार्य में कमी आने लगती है और उसकी उपलब्धि का स्तर लगातार कम होने लगता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विवरण निम्न प्रकार है—

- **विद्यालयी वातावरण**—विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी की शैक्षणिक चिंता को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, विद्यार्थी-विद्यार्थी संबंध अच्छे होते हैं, उचित शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है एवं विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधाएँ, जैसे— प्रयोगशाला, पुस्तकालय, स्वच्छ एवं आनंददायक कक्षा, योग्य शिक्षक आदि उपलब्ध कराए जाते हैं तो निस्संदेह उसमें शिक्षण कार्य के प्रति रुचि बढ़ती है, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के रूप में दिखाई देती है। वहीं, जहाँ विद्यालय वातावरण की परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के शिक्षण के अनुकूल नहीं रहती हैं तो उनमें शैक्षणिक चिंता होने की संभावना अधिक रहती है।
- **कक्षा-कक्ष का वातावरण**—कक्षा का वातावरण विद्यार्थियों के आपसी संबंध,

शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, शिक्षण विधि एवं आत्म-अनुशासन पर निर्भर करता है। इसके अभाव में विद्यार्थियों के बीच विद्रोही प्रकृति, ईर्ष्यालु भाव एवं एक-दूसरे के प्रति नकारात्मक सोच को जन्म मिलता है। इस कारण विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में बाधा उत्पन्न होती है, जो उनकी उपलब्धि को प्रभावित करती है और वे चिंता ग्रस्त हो जाते हैं।

- **दण्ड का भय**—शैक्षिक चिंता को बढ़ाने में दण्ड की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। दण्ड चाहे शारीरिक रूप से हो या आर्थिक रूप से, वह विद्यार्थी के मानसिक संतुलन को प्रभावित करता है। जिससे उसका शैक्षणिक कार्य भी प्रभावित होता है और विद्यार्थी में अन्य विद्यार्थियों के समक्ष हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है, जो उसकी शैक्षिक चिंता को बढ़ा देती है।
- **सहयोगियों की उदासीनता**— कक्षा में विभिन्न मानसिक एवं शारीरिक योग्यता वाले विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। कुछ विद्यार्थी सामान्य एवं कुछ निम्न बौद्धिक स्तर वाले होते हैं। जब निम्न बौद्धिक स्तर वाले या कमज़ोर विद्यार्थी अपने से अधिक योग्यता वाले साथियों से शिक्षण कार्यों में सहयोग माँगते हैं और वह सहयोग उन्हें प्राप्त होता है तो उनकी शिक्षण में रुचि बनी रहती है। परंतु जब उन्हें अपने सहयोगियों से उपेक्षा मिलती है तो वे उदासीन हो जाते हैं। फलस्वरूप वे शैक्षणिक रूप से चिंतित हो जाते हैं।
- **शैक्षिक उपलब्धि/परीक्षा परिणाम**—परीक्षा देने के पश्चात् विद्यार्थियों में परीक्षा परिणाम के प्रति विशेष भय एवं उत्सुकता रहती है। योग्यता के स्तर के अनुरूप शैक्षणिक उपलब्धि होने पर शैक्षणिक चिंता कम रहती है, परंतु यदि परिणाम अपेक्षित स्तर से कम प्राप्त होता है तो विद्यार्थी में शैक्षणिक चिंता परिलक्षित होती है।
- **उच्च महत्वकांक्षा स्तर**— प्रत्येक विद्यार्थी अपनी योग्यता के अनुसार अपनी आकांक्षा का निर्माण करता है एवं उसे पूरा करने हेतु प्रयास करता है। परंतु जब विद्यार्थी में उसकी महत्वाकांक्षा का स्तर अत्यधिक उच्च होता है और वह अपने प्रयासों से उसकी पूर्ति नहीं कर पाता है तो कभी-कभी वह शैक्षणिक चिंता का शिकार हो जाता है।
- **अनियमितता**—जब विद्यार्थी विद्यालय में अनियमित रहता है तो उसे कक्षा में पढ़ाई गई विषय-वस्तु की जानकारी नहीं रहती है। विद्यालय में उपस्थिति कम होने के कारण उसका शैक्षिक कार्य प्रभावित हो जाता है, जिससे उसमें शैक्षिक चिंता उत्पन्न हो जाती है। कभी-कभी आज का कार्य कल पर डालने और समय से कार्य पूरा न करने के कारण भी चिंता बढ़ जाती है।
- **संवेगात्मक अस्थिरता**—कुछ विद्यार्थी अत्यधिक संवेदनशील होते हैं तथा वे भावनात्मक रूप से कमज़ोर रहते हैं। जिन विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता नहीं होती, वे विशिष्ट परिस्थितियों में स्वयं को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की ज़रा-सी बात उन्हें विचलित कर देती है और वे प्रतिकूल व्यवहार के कारण अपनी क्षमता से कम शैक्षणिक कार्य करते हैं। इस कारण उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है, परिणामस्वरूप उनमें शैक्षणिक चिंता बढ़ जाती है।

- **परिवार**— अधिकतर अभिभावक अपने बच्चे से हर क्षेत्र में अधिक उपलब्धि एवं सफलता की आशा रखते हैं। परंतु जब उनका बच्चा उनकी सोच व आकांक्षा के अनुरूप उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसे कभी-कभी अपने परिवार के सदस्यों की अवहेलना का शिकार भी होना पड़ता है, जो उसकी शैक्षणिक चिंता को बढ़ा देता है। विद्यार्थी के पारिवारिक सदस्यों से संबंध एवं उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर भी उसके शैक्षणिक स्तर को प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है, उन्हें पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में शिक्षण कार्य करना होता है। इससे उनका शैक्षणिक स्तर प्रभावित होता है, जो उनमें चिंता को जन्म देता है।
- **हीन भावना**— कुछ परिवारों में कभी-कभी अभिभावक अपने बच्चे की तुलना किसी अन्य बच्चे से करते हैं जिससे बच्चे में कुण्ठा, ईर्ष्या और हीनता की भावना भर जाती है और वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगता है। कभी-कभी कुछ शिक्षकों के द्वारा कोई विशेष विद्यार्थी स्वीकृत किए जाते हैं व उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है, जिससे उन विद्यार्थियों में आत्मगौरव व आत्मविश्वास की भावना का विकास होता है। परंतु इसके विपरीत अस्वीकृत बालकों में हीनता की भावना घर कर लेती है जिसके कारण वे शिक्षण कार्यों में रुचि प्रदर्शित नहीं करते तथा असफलता के भय से उनमें शैक्षणिक चिंता उत्पन्न हो जाती है।
- **भाग्यवादी**—जब विद्यार्थी अपने पहले प्रयास में सफल नहीं हो पाता तो वह अपनी असफलता से विचलित हो जाता है। कुछ विद्यार्थी अपनी असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेते हैं एवं अपने प्रयास से उस कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। परंतु कुछ विद्यार्थी असफलता मिलने पर कार्य को भाग्य या किस्मत के भरोसे छोड़ देते हैं और प्रयास न करके उदासीन तथा कर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। फलस्वरूप वे चिंताग्रस्त हो जाते हैं।
- **स्वास्थ्य**—''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।'' यह उक्ति विद्यार्थी जीवन पर पूर्णतः लागू होती है। जब विद्यार्थी अस्वस्थ रहता है तो उसकी पढ़ाई में रुचि कम हो जाती है और उसका किसी कार्य में मन नहीं लगता है। वह अपने शिक्षण कार्य में पिछड़ जाता है तथा उसका उपलब्धि स्तर निरंतर प्रभावित होता है। फलस्वरूप उसमें शैक्षणिक चिंता दृष्टिगोचर होती है। ''स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन'' एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टकोिण से ''स्वस्थ मन तो स्वस्थ तन'' दोनों उक्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि जहाँ पहली उक्ति शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित है, वहीं दूसरी मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित है। अपर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य चिंता को जन्म देता है। इसलिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का अच्छा होना ज़रूरी है।
- **आत्मविश्वास में कमी**— विद्यार्थी कार्य करते समय यदि थोड़ा-सा असफल होता है तो

कभी-कभी उसके आत्मविश्वास में कमी आने लगती है, इससे उसमें शैक्षणिक कार्य के प्रति चिंता घर करने लगती है।

- **असुरक्षा की भावना**— कभी-कभी विद्यार्थी भविष्य में घटने वाली घटनाओं का नकारात्मक चिंतन करता है, जिसके फलस्वरूप वह दुःखी, विचलित एवं उदासीन हो जाता है। उसमें असुरक्षा की भावना घर कर जाती है और वह अपनी सफलता के प्रति शंकित हो जाता है तथा उसकी शैक्षिक चिंता बढ़ जाती है।
- **दृढ़ निश्चय का अभाव**—जब किसी विद्यार्थी को शिक्षक कोई कार्य सौंपता है तो वह उस कार्य को पूर्ण करना चाहता है, परंतु यदि उसमें दृढ़ निश्चय या कृत संकल्प की कमी होती है, तो वह उस कार्य को करने में समस्या महसूस करता है। फलस्वरूप वह कार्य निष्पादन सही ढंग से नहीं कर पाता है और उसमें शैक्षिक चिंता देखी जा सकती है।
- **निम्न बौद्धिक योग्यता**—जिन विद्यार्थियों में बौद्धिक एवं मानसिक योग्यता का स्तर उच्च होता है, उनमें चिंतन, स्मृति, तार्किक योग्यता, समस्या समाधान योग्यता आदि की क्षमता अधिक होती है जिस कारण वे परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त कर लेते हैं। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है, उनके प्राप्तांक निम्न स्तर के होते हैं। फलस्वरूप उनमें शैक्षिक चिंता पाई जाती है।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता पर कुछ शोध अध्ययनों का विवरण दिया गया है, जैसे— राणा, रिज़वान अकरम और नासिर महमूद (2010) ने स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि में संबंध ज्ञात करने का प्रयास किया। निष्कर्षस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक चिंता में नकारात्मक सह-संबंध पाया गया तथा परिणाम यह बताते हैं कि चिंता परीक्षण में वर्णात्मक चिंता से संज्ञानात्मक चिंता का प्रभाव अधिक पाया गया। सारांश रूप में यह पाया गया कि शैक्षिक चिंता विद्यार्थियों की कम उपलब्धि एवं खराब प्रदर्शन का एक प्रमुख कारण है। परंतु उचित प्रशिक्षण द्वारा इसके प्रभाव को नियंत्रित किया जा सकता है। परवथम्मा और शरनम्मा (2010) ने चिंता, आत्मविश्वास स्तर एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप हाईस्कूल के अधिकतर विद्यार्थियों (64.7 प्रतिशत) में उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता पाई गई। नीलम और अत्री (2013) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता एवं उनकी उपलब्धियों का अध्ययन किया। शोध से यह निष्कर्ष पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि में सार्थक अंतर होता है।

अलेसी, मारियाना; राप्पो, गाएतानो; पेपी, अन्नामारिना (2014) ने विद्यार्थियों की अधिगम अयोग्यता आत्मसम्मान के प्रति अवसाद एवं चिंता का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि अधिकतर बच्चे अवसाद से ग्रसित थे, जिसका मुख्य कारण रुचि एवं उत्साह की कमी थी, जिससे उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिगम अयोग्यता के कारण वह शैक्षिक चिंता

से ग्रसित थे। कुमारन, सेन्थिल और सुब्रमण्यम, कदिरावन (2015) ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं परीक्षा चिंता के संबंध में अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता एवं उनके व्यक्तित्व के मध्य सार्थक अंतर होता है। उनकी चिंता के स्तर पर विद्यार्थियों के जेंडर का प्रभाव पड़ता है। शर्मा, योगेश (2016) ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गणित विषय संबंधी शैक्षिक चिंता पर अध्ययन किया। अध्ययन से निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि शैक्षिक चिंता पर प्रसंग आधारित अधिगम का उच्च एवं मध्यम सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। टालबॉट, लौरेन (2016) ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता के फैलाव, प्रभाव एवं हस्तक्षेप का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि परीक्षा चिंता के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं, जो विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

उपरोक्त विवेचन एवं शोधों के आधार पर हम कह सकते हैं कि शैक्षिक चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि एवं शैक्षिक प्रगति पर प्रभाव डालती है। इस कारण इसकी भूमिका विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की शैक्षिक चिंता का होना आवश्यक माना है, क्योंकि शैक्षिक चिंता का सकारात्मक पहलू होने के कारण कुछ मात्रा या सामान्य स्तर की शैक्षिक चिंता विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित करती है। इसके विपरीत शैक्षिक चिंता का नकारात्मक पक्ष भी होता है, जिससे पीड़ित होकर विद्यार्थी अपनी उपलब्धि को आशानुकूल प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस परिस्थिति में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों को शैक्षणिक मार्गदर्शन देकर उनमें सुधार की संभावनाओं को बढ़ा सकता है। जिससे विद्यार्थी सही ढंग से समायोजन स्थापित कर सकते हैं, क्योंकि शैक्षणिक मार्गदर्शन विद्यार्थियों के लिए अच्छा प्रेरणा स्रोत होता है। अतएव यह कह सकते हैं कि प्रभावशाली शिक्षक वह है, जो यह जानता है कि चिंता को कक्षा में कैसे उत्पन्न किया जाए। किस प्रकार अधिक चिंता का मुकाबला किया जाए और विद्यार्थियों में चिंता का स्तर कितना रखा जाए। क्योंकि विद्यार्थियों में एक सामान्य एवं मध्यम स्तर की चिंता होना आवश्यक है, जो उन्हें आगे बढ़ने एवं उपलब्धि प्राप्त करने में प्रेरणा के रूप में सहायक होती है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य थे —

- हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ थीं —

- हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
- अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध सीमा

इस शोध अध्ययन की सीमा निम्नलिखित थी —

- यह शोध केवल उत्तर प्रदेश के सोनभद्र ज़िले तक ही सीमित था। शोध अध्ययन हेतु हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों का चयन किया गया था।
- शोध अध्ययन 11वीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर ही किया गया था।
- शोध अध्ययन के लिए सह-शिक्षा वाले विद्यालयों का ही चयन किया गया था, जिसका कारण यह था कि बालक एवं बालिकाओं का विद्यालयी वातावरण समान हो।
- शोध अध्ययन के लिए केवल उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया था, जो उसी विद्यालय में कम-से-कम तीन वर्षों से अध्ययनरत थे।

शोध विधि

शोधक ने आवश्यक सूचनाएँ एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया था। शोधक ने इस विधि के माध्यम से उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के विशेष संदर्भ में विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु यादृच्छिक, स्तरित एवं सोद्देश्य न्यादर्श विधियों का चयन किया गया था। न्यादर्श चयन का विस्तृत विवेचन निम्न है—

1. ***विद्यालयों का चयन***

   सर्वेक्षण हेतु विद्यालय का चयन स्तरित विधि से किया गया। विद्यालयों को चयनित करने के लिए शोधक ने सर्वप्रथम शिक्षा अधिकारी कार्यालय जाकर हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के इण्टरमीडिएट विद्यालयों की सूची प्राप्त की तथा उनमें से उन्हीं विद्यालयों का चयन किया गया जिनमें छात्र एवं छात्राएँ, दोनों अध्ययन करते हों। तदुपरान्त तहसील, ब्लॉक एवं शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर विद्यालयों का वर्गीकरण किया गया तथा विद्यालयों के वर्गीकरण के पश्चात् यादृच्छिक विधि द्वारा हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के 10–10 विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें से पाँच-पाँच शहरी एवं पाँच-पाँच ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय लिए गए थे।

2. ***विद्यार्थियों का चयन***

   विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्य विधि से किया गया। न्यादर्श के चयन में कक्षा 11 के उन्हीं विद्यार्थियों

को स्थान दिया गया जो उसी विद्यालय में कम-से-कम तीन वर्षो से अध्ययनरत थे। इसका कारण यह था कि चयनित विद्यार्थियों पर उस विद्यालय के विद्यालयी वातावरण का पूरा-पूरा प्रभाव देखा जा सके। शोधक जेंडर भेद पर अध्ययन करना चाहता था, इसी कारण कक्षा 11वीं के उन्हीं वर्गों का चयन किया गया, जहाँ छात्र-छात्राएँ एक साथ पढ़ते हों। तदुपरांत चयनित कक्षा एवं वर्ग की विद्यार्थी उपस्थिति पंजिका लेकर क्रमानुसार छात्र एवं छात्राओं के नाम को अलग कर एक सूची तैयार की गई एवं सूची में से आरोही क्रम में क्रमशः प्रत्येक पाँचवें छात्र एवं छात्रा का चयन किया गया। न्यादर्श के लिए कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 400 विद्यार्थी हिंदी एवं 400 अंग्रेज़ी माध्यम के लिए गए। प्रत्येक 400 विद्यार्थियों में आधे शहरी एवं आधे ग्रामीण क्षेत्र के थे। इस प्रकार शहरी एवं गामीण क्षेत्र के कुल 400–400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श के चयन के प्रत्येक चरण में ये ध्यान रखा गया कि छात्र एवं छात्राओं का अनुपात समान हो।

3. *उपकरण का चयन*

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सिंह और सेन गुप्ता (2013) द्वारा निर्मित शैक्षणिक चिंता मापनी का उपयोग किया गया। मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि से 0.60 एवं अर्द्ध विच्छेदन विधि से 0.65 प्राप्त की गई। सिन्हा (1973) के चिंता मापनी के साथ सह-संबंध के आधार पर मापनी की वैधता निकाली गई। मापनी का वैधता गुणांक 0.41 आया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

शोधक द्वारा प्राप्तांकों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण द्वारा किया गया, जिसे तालिका 2, 3 व 4 में दिया गया है।

शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र और शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेज़ी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता में पर्याप्त सार्थक अंतर प्राप्त नहीं है। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के छात्रों की शैक्षिक चिंता पर

तालिका 1— न्यादर्श का क्षेत्र, माध्यम एवं जेंडर के आधार पर वितरण

विद्यालय प्रकृति	क्षेत्र	विद्यालयों की संख्या	छात्र	छात्राएँ	योग
हिंदी माध्यम	शहरी क्षेत्र	5	100	100	200
	ग्रामीण क्षेत्र	5	100	100	200
अंग्रेज़ी माध्यम	शहरी क्षेत्र	5	100	100	200
	ग्रामीण क्षेत्र	5	100	100	200
योग		20	400	400	800

वातावरण का प्रभाव जानने के लिए 'एफ' अनुपात ज्ञात किया गया। परिणामस्वरूप (तालिका 3 से) यह ज्ञात हुआ कि छात्रों की शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र और शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेज़ी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता समान पाई गई।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र प्रायः विद्यालयों के अलावा कोंचिग संस्थानों में भी अध्ययन करते होंगे। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक अपने पाल्यों हेतु शिक्षा की यह समानांतर व्यवस्था प्रदान करने की व्यवस्था समान रूप से करने का प्रयास करते होंगे। दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में प्रतियोगी परीक्षाओं एवं मुख्य परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने के लिए समान रूप से अवसर प्रदान किया जाता होगा, जिसके कारण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव समान रूप से पड़ता होगा।

छात्राओं की शैक्षिक चिंता संबंधित परिणामों (तालिका 2) के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण, शहरी एवं शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेज़ी एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का वहाँ के विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण की अपेक्षा अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण की छात्राओं की शैक्षणिक चिंता सांख्यिकीय दृष्टिकोण

तालिका 2 — हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र/ छात्राओं के शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम

क्रमांक	विद्यार्थी	क्षेत्र	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्य त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता* स्तर
1.	छात्र	ग्रामीण	हिंदी माध्यम	100	12.69	5.18	0.52	0.62	सार्थक नहीं
			अग्रेज़ी माध्यम	100	13.11	4.40	0.44		
2.	छात्र	शहरी	हिंदी माध्यम	100	11.79	3.59	0.36	0.13	सार्थक नहीं
			अग्रेज़ी माध्यम	100	11.72	4.22	0.42		
3.	छात्र	शहरी-ग्रामीण	हिंदी माध्यम	200	12.24	4.47	0.32	0.40	सार्थक नहीं
			अग्रेज़ी माध्यम	200	12.42	4.36	0.31		
4.	छात्राएँ	ग्रामीण	हिंदी माध्यम	100	18.32	7.04	0.70	5.27	सार्थक है
			अग्रेज़ी माध्यम	100	14.10	3.83	0.38		
5.	छात्राएँ	शहरी	हिंदी माध्यम	100	17.44	6.91	0.69	6.29	सार्थक है
			अग्रेज़ी माध्यम	100	10.90	12.00	3.14		
6.	छात्राएँ	शहरी-ग्रामीण	हिंदी माध्यम	200	17.88	6.97	0.49	8.12	सार्थक है
			अग्रेज़ी माध्यम	200	13.38	3.57	0.25		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

तालिका 3 — हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र/ छात्राओं के शैक्षिक चिंता संबंधित परिणाम का एफ अनुपात

क्रमांक	विद्यार्थी	विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	औसत वर्ग	एफ अनुपात	सार्थकता* स्तर
1.	छात्र	समूहों के मध्य	3	140.17	46.72	2.43	सार्थक नहीं
		समूहों के साथ	396	7611.93	19.22		
2.	छात्राएँ	समूहों के मध्य	3	2167.40	772.47	23.71	सार्थक है
		समूहों के साथ	396	12067.84	30.47		
3.	छात्र-छात्राएँ	समूहों के मध्य	7	4488.87	641.27	25.81	सार्थक है
		समूहों के साथ	792	19679.77	24.85		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

तालिका 4 — हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र/ छात्राओं के शैक्षिक चिंता संबंधित तुलनात्मक परिणाम

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यालय	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्य त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता* स्तर
1.	ग्रामीण	हिंदी माध्यम	छात्र	100	12.69	5.18	0.52	6.44	सार्थक है
			छात्रा	100	18.32	7.04	0.70		
2.	ग्रामीण	अग्रेज़ी माध्यम	छात्र	100	13.11	4.40	0.44	1.70	सार्थक नहीं
			छात्रा	100	14.10	3.83	0.38		
3.	शहरी	हिंदी माध्यम	छात्र	100	11.79	3.59	0.36	7.25	सार्थक है
			छात्रा	100	17.44	6.91	0.69		
4.	शहरी	अग्रेज़ी माध्यम	छात्र	100	11.72	4.22	0.42	1.79	सार्थक नहीं
			छात्रा	100	12.66	3.14	0.31		
5.	शहरी-ग्रामीण	हिंदी माध्यम	छात्र	200	12.24	4.47	0.32	9.63	सार्थक है
		अग्रेज़ी माध्यम	छात्रा	200	17.88	6.97	0.49		
6.	शहरी-ग्रामीण	अग्रेज़ी माध्यम	छात्र	200	12.45	4.06	0.29	6.62	सार्थक है
			छात्रा	200	15.77	5.82	0.41		
7.	शहरी-ग्रामीण	हिंदी-अग्रेज़ी माध्यम	छात्र	400	12.35	4.27	0.21	11.52	सार्थक है
			छात्रा	400	16.83	6.50	0.33		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

से कम पाई गई। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण का वहाँ अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर ज्ञात करने हेतु 'एफ अनुपात' की गणना की गई (तालिका 3), इससे यह ज्ञात होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं की शैक्षणिक चिंता के मध्य पर्याप्त सार्थक अंतर है।

संभवतः इस प्रकार के परिणाम का कारण अंग्रेज़ी माध्यम के उत्तम विद्यालयी वातावरण के साथ-साथ शिक्षकों का छात्राओं की शिक्षा के प्रति व्यक्तिगत ध्यान भी हो सकता है। ऐसा अनुमान है कि शिक्षक छात्राओं को निडर होकर प्रश्नों के समाधान करने हेतु प्रोत्साहित करते होंगे जिससे छात्राएँ अपनी व्यक्तिगत शैक्षणिक समस्याओं का समाधान आसानी से प्राप्त कर लेती होंगी। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण में अध्यापकगण विभिन्न प्रकार की नवाचारी शिक्षण विधियों, शिक्षक सहायक सामग्रियों, कम्प्यूटर आधारित कक्षाओं और स्मार्ट कक्षाओं का प्रयोग कर अधिगम क्रिया को सुंदर, सरल, सुबोधगम्य एवं सुरुचिपूर्ण बना देते होंगे। जिससे छात्राएँ भी उत्साहित होकर सरलता से अपने अधिगम कार्य को पूरा कर लेती होंगी। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक चिंता भी अपेक्षाकृत कम होती होगी।

तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम, शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेज़ी माध्यम तथा शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी-अंग्रेज़ी माध्यम के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में लैंगिक भिन्नता पाई गई एवं सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। छात्रों की शैक्षिक चिंता छात्राओं की अपेक्षा कम प्राप्त हुई है।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि हमारे समाज में अभिभावक छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शिक्षा पर अपेक्षाकृत कम ध्यान देते होंगे एवं छात्रों से यह अपेक्षा की जाती होगी कि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करें तथा भविष्य में पारिवारिक ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करने योग्य बन सकें। जिसके कारण छात्र उच्च उपलब्धि प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित होते होंगे। परिणामस्वरूप छात्रों में शैक्षिक चिंता का स्तर न्यून हो जाता होगा। इस प्रकार कुमारन, सेन्थिल और सुब्रमण्यम, कदिरावन (2015), नीलम और अत्री (2013), परवथम्मा और शरनम्मा (2010) द्वारा किए गए शोध कार्यों के परिणाम इस शोध परिणाम की पुष्टि करते हैं।

तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के अंग्रेज़ी माध्यम एवं शहरी क्षेत्र के अंग्रेज़ी माध्यम के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिंता पर लैंगिक भिन्नता का कोई प्रभाव नहीं पाया गया, क्योंकि सांख्यिकी दृष्टिकोण से छात्र एवं छात्राओं की शैक्षाणिक चिंता एक समान है।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान परिवेश में जागरूकता के कारण लड़के एवं लड़कियों के बीच का अंतर प्रायः भुला दिया गया होगा। माता-पिता अपने बेटे एवं बेटियों को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करने का प्रयास

करते होंगे एवं उनको उच्च पदों पर देखने की इच्छा रखते होंगे। अभिभावक अपने बेटे एवं बेटियों को सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते होंगे एवं उच्च सफलता के लिए अभिप्रेरित करते रहते होंगे। अपने अभिभावकों की उच्च आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए दोनों समान रूप से दृढ़ संकल्पित रहते होंगे। बालिकाएँ स्वयं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने एवं अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए सदैव प्रयासरत रहती होंगी। उनका यह प्रयास शैक्षणिक उपलब्धि के रूप में दिखाई देता होगा जिसके कारण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिंता में लैंगिक भिन्नता प्राप्त नहीं हुई।

परिकल्पनाओं का सत्यापन

परिकल्पनाओं का सत्यापन प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर किया गया है।

परिकल्पना 1— हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा

ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम हुआ। अतः परिकल्पना 1 पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2— हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा

ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना 2 पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3—हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा

ग्रामीण, शहरी व शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना 3 पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 4—अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर नहीं होगा

शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता

का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक प्राप्त हुआ।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 2, 3 एवं 4 से प्रदर्शित होता है कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना 4 अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष

इस शोध कार्य 'विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव' के अंतर्गत परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण के फलस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्रों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 2) का मान क्रमशः 0.62, 0.13 व 0.40 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम है।
- ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण का छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण, शहरी, शहरी-ग्रामीण हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 2) का मान क्रमशः 5.27, 6.29 व 8.12 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।
- ग्रामीण, शहरी व शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण, शहरी व शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) का मान क्रमशः 6.44, 7.25 व 9.63 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।
- शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों के अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) का मान 6.62 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से अधिक है।

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता का उनकी लैंगिक भिन्नता पर प्रभाव नहीं पड़ता है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयी वातावरण के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका 4) का मान क्रमशः 1.70 व 1.79 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान से कम है।

शैक्षिक महत्व

विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनेक क्षेत्रों में शोध कार्य किए जाते हैं। इनमें शोधक द्वारा किया गया शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है। शोधक ने अपने शोध कार्य में विद्यालयी वातावरण का छात्र-छात्राओं की शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

विद्यालयी वातावरण एक ऐसा कारक है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता है। इस शोध में यह पाया गया कि शहरी, ग्रामीण हिंदी माध्यम एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में पर्याप्त अंतर है। एक ओर शहरी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय उच्च वातावरण वाले हैं। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण एवं हिंदी माध्यम के अधिकांश विद्यालयों का वातावरण प्रायः सामान्य अथवा निम्न स्तर का है। शोध द्वारा यह सिद्ध होता है कि निम्न अथवा सामान्य स्तर के विद्यालयी वातावरण के छात्र-छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता न्यून अथवा अधिक होती है। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम हो जाती है। इसके विपरीत उच्च विद्यालयी वातावरण वाले छात्र-छात्राओं में शैक्षिक चिंता का स्तर सामान्य होता है। परिणामस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च प्राप्त होती है।

इस शोध कार्य के परिणामों का उपयोग कर हम ग्रामीण एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में सुधार करने हेतु एक अभिभावक के रूप में, एक शिक्षक के रूप में एवं एक प्रशासक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों की समझ प्राप्त कर सकते हैं और दायित्वों को पूरा करते हुए ग्रामीण अंचलों एवं हिंदी माध्यम के विद्यालयों के वातावरण का भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आदि रूपों में विकास करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे छात्र-छात्राओं के मध्य उचित उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास सुनिश्चित हो सकेगा। शैक्षिक चिंता भी सामान्य हो जाएगी और निश्चित रूप से छात्र-छात्राओं में लैंगिक भिन्नता समाप्त हो जाएगी। परिणामस्वरूप छात्र एवं छात्राएँ सामान रूप से अधिगम परिणाम दे सकेंगे।

संदर्भ

अलेसी, मारियाना, राप्पो, गाएवानो, गायटैनो और आन्नामारिना पेपी. 2014. डिप्रेशन, एंज़ायटी एट स्कूल एंड सेल्फ़-एस्टीम इन चिल्ड्रेन विद लर्निंग डिसएबिलिटीज़. *जर्नल ऑफ़ साइकॉलॉजिकल-अब्नोर्मेलिटीज़ इन चिल्ड्रन.* यूनिवर्सटीज़

ऑफ़ पलेर्मो, इटली. https://www.esciencecentral.org/journals/depression-anxiety-at-school-and-selfesteem-in-children-with-learning-disabilities-2329-9525.1000125.php?aid=28325 से लिया गया है.

कुमारन, सेन्थिल और कदिरावन सुब्रमण्यम. 2015. पर्सनेलिटी एंड टेस्ट एंज़ायटी ऑफ़ स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइकॉलॉजिकल रिर्सच*. वॉल्यूम 4, इश्यू 2.

टालबॉट, लौरेन. 2016. टेस्ट एंज़ायटी—प्रीवेलेंस, इफ़ेक्ट्स एंड इंटरवेंशंस फ़ॉर एलेमेंट्री स्कूल स्टूडेंट्स. *जेम्स मैडीसंस अंडरग्रेजुएट रिसर्च जर्नल*. वॉल्यूम 3 नं.1. पृ. 42–51. http://commons.lib.jmu.edu/jmurj/vol3/iss1/5/.से लिया गया है.

नीलम और ए.के.अत्री. 2013. एकेडेमिक एंज़ायटी एंड अचीवमेंट ऑफ़ सेकंडरी स्कूल स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ बिहेवयरल सोशल एंड मूवमेंट साइंसेज़* . वॉल्यूम III. पृ. 27.

परवथम्मा, जी.एच. और आर. शरनम्मा. 2010. एंज़ायटी लेवल एंड लेवल ऑफ़ सेल्फ़ कॉन्फ़िडेंस एंड देअर रिलेशन विद अकेडमिक अचीवमेंट. *इडुट्रैक्स— ए मंथली स्कैनर ऑफ़ ट्रेड्स इन एजुकेशन*. 9(7), पृ. 37–40.

बुच, एम.बी. 1983–88. *फ़ोर्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. वॉल्यूम I. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 1993–2000. *सिक्स्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. वॉल्यूम II. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

राणा, रिज़वान अकरम और नासिर महमूद. 2010. द रिलेशनशिप बिटवीन टेस्ट एंज़ायटी एंड अकेडमिक अचीवमेंट. *बुलेटिन ऑफ़ एजुकेशन एंड रिर्सच*. वॉल्यूम 32, न. 2, पृ. 63–74.

लेविट, यूजिन, ई. 1967. *द साइकॉलजी ऑफ़ एंज़ायटी*. पृ. 38, 3, 55. बौब्स मेरिल कंपनी, न्यूयॉर्क.

शर्मा, योगेश. 2016. एलिवेटिंग मैथमेटिक्स एंज़ायटी ऑफ़ एलिमेंट्री स्कूल स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइंस*. वॉल्यूम 2, न. 2. पृ. 506–517.